बाल संस्कार सौरभ

भाग-4

संकलन/संपादन

बा.ब्र. रोहित भैया

(सम्प्रति संधानसागर जी महाराज)

संघस्थ आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज

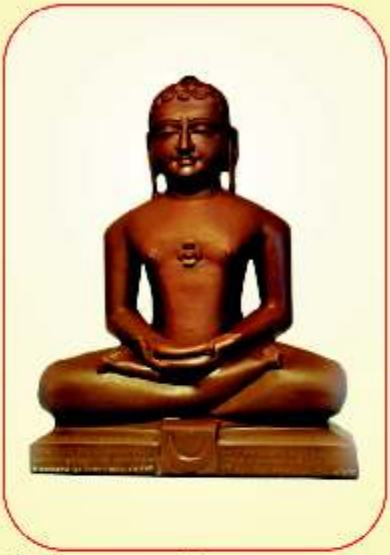

अतिमनोज्ञ मूलनायक श्री 1008 चन्द्रप्रभु भगवान

सिद्धिदायक श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान

गुणायतन, शिखरजी, मधुवन (झारखण्ड)

बाल संस्कार सौरभ

भाग-4

संकलन/संपादन

बा.ब्र. रोहित भैया

(सम्प्रति संधानसागर जी महाराज)

संघस्थ आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज

- कृति : बाल संस्कार सौरभ : भाग-4
- आशिर्वाद एवं प्रेरणा : **संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक निर्ग्रन्थ गौरव शिष्य पूज्य मुनिश्री 108 प्रमाणसागरजी महाराज**
- संकलनकर्ता : **बा.ब्र. रोहित भैया** (सम्प्रति संधानसागर जी महाराज)
- संस्करण : द्वितीय, जून 2017
- मूल्य : सदुपयोग
- पुण्यार्जक : किरण-विनोद, पूजा-राहुल
कल्पा-रितुम, अनुजा-सौरभ
एवं समस्त काला परिवार, कोलकाता
- प्राप्ति-स्थल : 1. श्री प्रशान्त जैन, भोपाल (म.प्र.)
मो. 9617700813
2. 'गुणायतन' शिखर जी, मधुवन
फोन : 06558-232438
- प्रकाशक : निर्ग्रन्थ फाउण्डेशन, भोपाल
- मुद्रक : विकास ऑफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स
45, सेक्टर-एफ, औद्योगिक क्षेत्र, गोविन्दपुरा
भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2601952, 09425005624

उद्गार

वर्तमान काल में भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति द्वारा कुठाराघात तेजी से बढ़ रहा है। ऐसी स्थिति में कोमल हृदयी नन्हें बालकों को संस्कारित करना बहुत आवश्यक हो गया है। बचपन में जैसे संस्कार हम बच्चों में डालेंगे, वैसा ही उनका पूर्ण जीवन बन जायेगा। आज बच्चों के परिजन बच्चों की भौतिक शिक्षा पर तो विशेष ध्यान देते हैं, किन्तु धार्मिक शिक्षा पर कोई ध्यान नहीं देते। याद रखें जो माता-पिता नन्हें बच्चों की अंगुली पकड़कर मन्दिर या पाठशाला में ले जाकर संस्कारवान बनाते हैं, वे ही बच्चें बड़े होकर उनके बुढ़ापे का सहारा बनते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक बालसंस्कार सौरभ (अब चार भाग में है) प्रथम भाग में खेल-खेल में बच्चों की धार्मिक शिक्षा एवं संस्कारवान बनाने की बात बतायी है। वहीं दूसरे भाग में जैन धर्म एवं दर्शन की ABCD... बताई है तथा गाने-गाने में नन्हें-मुन्ने बच्चों को जैन धर्म की आधारभूत बातें सिखायें, यह बताया गया है। भाग-3 में बच्चों को प्रथमानुयोग की कहानी सुनाकर संस्कारवान बनाया जा सकता है। भाग-4 में बच्चों को कैसे पूजन करायें तथा साथ ही उन्हें भजनों के माध्यम से कैसे संस्कार आरोपित कर सकते हैं। शिक्षाप्रद भजनों का बहुत अच्छा समावेश इस पुस्तक में है। आचार्यों ने कहा है कि एक पाठशाला को ठीक रूप से संचालित कर उसमें सहयोग करने का मतलब है, ''10 जेल बंद करना, अपराध पर अंकुश लगाना'' पाठशाला वह टकसाल है जहाँ संस्कारों की गढ़ाई होती है।

पाठशाला हमारे संस्कारों को बचाने का सशक्त माध्यम है। अपने बच्चों को बचपन से ही पाठशाला जाने के संस्कार डालें साथ ही 15-20 वर्ष वय के बालक-बालिकायें भी पाठशाला से विमुख न हो, वे जितना जरूरी स्कूल की पढ़ाई समझते हैं उससे ज्यादा जरूरी संस्कारशाला/पाठशाला को भी समझें। ये बचपन के संस्कार न जाने किस समय आपके जीवन को बर्बाद होने से बचा ले। अतः मेरा तो सभी अभिभावकों एवं बच्चों से यही अनुरोध है कि अगर अपना जीवन उन्नत बनाना चाहते हो तो कभी पाठशाला को मत भूलना। परिवार, समाज, जाति, राष्ट्र सबका कल्याण इन्हीं संस्कारों से होगा।

रोज पाठशाला न आ सकें तो कम से कम सप्ताह में दो दिन तो पाठशाला अवश्य आकर अपने भीतर संस्कारों का वपन कर सकते हैं।

ब्र. रोहित भैया

(सम्प्रति संधानसागरजी महाराज)

अनुक्रम

क्र.	विषय	पृष्ठ क्र.
1.	आवों करें पूजन	7
2.	देवपूजन	22
3.	भजन –1 : कितना प्यारा तेरा दुआरा...	31
4.	भजन –2 : रोम–रोम से निकले गुरुवर...	32
5.	भजन –3 : धीरे–धीरे चलो जी मंदिर...	33
6.	भजन –4 : जीवन है पानी की बूँद...	34
7.	भजन –5 : कर लो जिनवर का गुणगान...	34
8.	भजन –6 : हे गुरुवर धन्य हो तुम...	35
9.	भजन –7 : रंगमा–रंगमा–रंगमा रे...	36
10.	भजन –8 : डोली वाले कहते हैं...	36
11.	भजन –9 : मंत्र णमोकार हमें प्राणों से प्यारा...	37
12.	भजन –10 : श्री आदिनाथ भगवान बड़े बाबा मेरे...	38
13.	भजन –11 : भगवान मेरी नैय्या...	39
14.	भजन –12 : नाम तुम्हारा तारणहारा...	40
15.	भजन –13 : आया कहाँ से कहाँ है जाना...	41
16.	भजन –14 : उठ जाग मुसाफिर भोर भई...	42
17.	भजन –15 : सोते–सोते ही निकल गई सारी जिन्दगी...	43
18.	भजन – 16 : जीवन के किसी भी पल में...	43
19.	भजन – 17 : जिया कब तक उलझेगा...	44
20.	भजन – 18 : पाना नहीं जीवन को...	45
21.	भजन – 19 : जब भी नैन मूंदो...	46
22.	भजन – 20 : विद्यासागर गंगा...	47
23.	भजन – 21 : आनन्द अपार है...	48
24.	भजन – 22 : निरखो अंग–अंग जिनवर...	49
25.	भजन – 23 : ये कागज की नाव...	50
26.	भजन – 24 : ओ पालन हारे गुण धारे...	51
27.	भजन – 25 : प्रभु नाम जपने से...	52
28.	भजन – 26 : तू अन्तरयामी सबका स्वामी...	53
29.	भजन – 27 : गुरु आपकी कृपा से...	54
30.	भजन – 28 : वीर नाम अति प्यारा है...	55
31.	भजन – 29 : मेरे दुःख के दिनों में वो...	55
32.	भजन – 30 : अब ना करें मनमानी...	56

आओं करें पूजन

बच्चों को प्रत्येक रविवार को संगीतमय पूजन करवायें बड़ा आनन्द आयेगा। ये संस्कार उसे प्रतिदिन पूजा के लिये प्रेरणा देंगे। कुछ महत्वपूर्ण बातें जो पूजन के समय ध्यान रखें -

1. सभी बच्चे लाईन से बैठें, ड्रेस में हो। सभी के पास द्रव्य सामग्री हो अर्थात् एक थाली में 4-5 बच्चे ही पूजा करें। सभी के हाथ में पतली वाली पुस्तक हो। भले ही उसे पढ़ना आये या न आये। धीरे-धीरे उसे भी सिखायें।
2. पूजन लयात्मक हो भले ही एक ही पूजा हो, इस हेतु तर्ज कैसे एवं कौन सी ले, हमारा अध्याय (Chapter) देखें।
3. पूजन मे से 5 प्रश्न पूछकर 5 इनाम देने का पहले शुरू में ही बोल दें। जिससे बच्चे ध्यान से पढेंगे।
4. बीच-बीच में पूजन का अर्थ या उससे सम्बन्धित कोई भी जानकारी देते रहें।
5. पूजन के उपरान्त स्वल्पाहार की व्यवस्था अवश्य रखें।
6. अचरी (तर्ज) में फिल्मी भजन न लेकर पारम्परिक भजन ही लेने का प्रयास करें।
7. पूजा की पंक्तियों को ज्यादा दोहरायें जिससे बच्चों को याद हो जाये।
8. जिन बच्चों की आवाज सुरीली हो-लयात्मक हो उन्हें प्रोत्साहन दें।
9. पूजन करना श्रावक का आवश्यक कर्म है अतः प्रतिदिन न सही कम से कम सप्ताह में एक अथवा दो बार सामूहिक पूजन अवश्य करायें, जिससे बच्चों तथा बड़ों में संस्कार पड़ सके। कहा भी है -

देव पूजा गुरू पास्ति स्वाध्यायः संयमः तपः।
दानं चेति गृहस्थानां, षट्कर्माणि दिनेदिने॥

कब-कौन सी तर्ज लें -

1.	**विनय पाठ** - दोहा	-	रोम-रोम से...
		-	कितना प्यारा तेरा...
		-	धीरे-धीरे चलो...
		-	जीवन है पानी...
		-	ओ पालनहारे... आदि
2.	**णमोकार मंत्र**	-	णमोकार मंत्र है प्यारा...
		-	मंत्र णमोकार हमे प्राणों...
		-	मंत्र जपो णमोकार मनवा...
		-	संदेशे आते हैं...
		-	मंत्र में प्यारा है... आदि
3.	**अपवित्र-पवित्रो वा...**	-	जीवन है पानी की बूँद...
		-	मेरे सर पर रख दो गुरुवर...
4.	**उदक चन्दन**	-	जीवन के किसी भी पल में...
		-	आशीष हमें देते रहना...
5.	**श्री मज्जिनेन्द्र**	-	भक्तामर स्तोत्र की तरह
6.	**स्वास्ति मंगल पाठ**	-	है पारस नाम बड़ा प्यारा
		-	जिस दिन ये पापी मन...
		-	लक्खा तर गए तक्खा न तर जाणा जिनाने तेरा नाम जपिंया-2 आदिनाथ जपियाँ, अजितनाथ जपियाँ संभवनाथ जपियाँ, अभिनंदन जपियाँ, लक्खा... सभी तीर्थंकर...
		-	ऊँचा है पहाड़ ऊँचा शिखरों का धाम, जैनियों की काशी है, ये मधुवन धाम

7. **परमर्षि मंगलपाठ** – तुम्हीं हो माता-पिता तुम्हीं हो...
– अब ना करेंगे मनमानी...
– चले है सुकुमाल देखो मुनि बनके...
– सुगुरु की विद्या करो प्रमाणिक...
– रंगमा-3 रे...
– ढोल बजाके के बोल की बाबा मेरा है...
– नाचे जो मन को मोर रे...

8. **नवदेवता पूजा**
(आ. पूर्णमती माताजी)
स्थापना (ज्ञानोदय छंद) – आओ जी आओ जी प्रभु जी
पूजा – भगवान मेरी नैय्या...
– माता दू दया करके...
– जहाँ नेमी के चरण...
– हीरे को परख लिया...
– जिया कब तक उलझेगा...
– ओ ऽऽऽऽ गुरुवर-3
मिलेंगे तुम तो बतायेंगे
कितने कष्ट हमें...
– ये है पावन भूमि... आदि
जयमाला – झूमझूम के...
(चौपाई) – सम्मेद शिखर जी में धर्म की वर्षा...
– मंगल भवन अमंगल हारी.... आदि

9. **अर्घ्यावली** – श्री आदिनाथ भगवान बड़े बाबा मेरे...
(ज्ञानोदय या अन्य)

10. **शान्तिपाठ** (चौपाई) – जयमाला की तरह

11. **विसर्जन पाठ** – चलते-चलते, गाते-गाते
प्रभु के गीत याद रखना,
तुम सत पथ पर चलना-2
हंसते-हंसते जीवन में प्रभु नाम जपना
तुम सत पथ पर चलना...

कुछ महत्वपूर्ण छंद - कौन से छंद में कौन सी अचरी

दोहा :-

– मेरी आरजू तो भगवन सुनिये, तीनों लोकों के तुम सरताज हो,
तुम्हें दुनिया कहे है परमातमा, मुझ दुखिया की रखना लाज हो।
– जरा ध्यान में तो लाओ प्रभू को, पल छिन-छिन-छिन घट जात है,
गर अब भी न कुछ कर पाओगे तो सामने अंधेरी रात है।
– जरा सोच लो समझ लो भैय्या, ये संयम सुमेरु का भार है,
है कठिन व्रतों का पालना, बच्चों का नहीं खिलवाड़ है।
– चांदनी फीकी पड़ जाये-2, छवि देखत श्री वितराग की सूरज शरमाये
– तेरा द्वारा कितना प्यारा...
– कबीर वाणी
– रोम-रोम से निकले प्रभुवर...
– मात-पिता प्रभु गुरु चरणों में प्रणाम बारम्बार,
हम पर किया बड़ा उपकार...
– तू ज्ञान का सागर है-2, आनंद का सागर है,
उसी आनंद के प्यासे हम...
– जीवन है पानी की बूंद...
– सोते-सोते में गुजर गई सारी जिन्दगी...
– मैंने तेरे ही भरोसे पारसनाथ भंवर में नैय्या...
– शायद अपने पुण्योदय का अवसर आया है,
इसीलिए तो सिद्धचक्र का पाठ रचाया है
– अपने में अपना परमातम, अपने से ही पाना रे,
अपने को पाने हेतु बस ओर कहीं नहीं जाना रे,

- क्या मिलिए ऐसे लोगों से जो स्वयं के द्वारा ठगे गये,
  जनवाणी तो याद रही पर जिनवाणी को भूल गये...
- भला किसी का कर न सको तो...
- जाने वाले एक संदेशा गुरुवर से तुम कह देना
  तेरी याद में तड़फ रहे हैं, हमको दर्शन दे देना...
- बाबुल की दुआहें...
- गुरुदेव न जाओ छोड़ हमें तुम बिन कैसे रह पायेंगे
  इस विरह व्यथा को हे गुरुवर हम सब कैसे सह पायेंगे।
- आशीष हमें देते रहना हमें रत्नत्रय भण्डार मिले,
  हम मोक्ष मार्ग पर डटे रहें, ऐसा हमको वरदान मिले।
- नाम तुम्हारा तारण-हारा...
  भव से पार उतरने को तो बस तेरा शरणा होगा...
- ऊँचा है पहाड़ ...
- गुरुवर जी मुझे अंत समय मे समाधी मरण सुना देना
- गुरु नाम जपने से नवजीवन मिलता है,
  तन मन का मुरझाया उपवन खिलता है,
  अंतर के कोने में, एक दिपक जलता है,
  वो तो शिखर जी से आयो टेलिफोन
  भक्तां से बाबा बात करें-3
- म्हारो तो महावीरो सबसे न्यारो...
- यह द्वार है मेरे वीरा का, कहना है सारे ऋषियों का,
  इस द्वार पे मेले लगते हैं, लाखों के नसीब यहाँ खुलते हैं
  जय हो-3...
  गुंजे जंगल सिंह दहाड़ो से, आती आवाज पहाड़ों से
  यहाँ नित नये मेले लगते हैं, नित ढोल और तासे बजते हैं,
  जय हो-3...
- तेरे दर का ठीकाना हो गया, बाबा जी बाबा जी,
  दिल तेरा दीवाना हो गया, बाबा जी बाबा जी

- विद्यासागर का वेष बनाया, महावीर नगर में आया,
  भक्त आने लगे, भीड़ बढ़ने लगी-2
  इनके चरणों में शीश झुकाया, वीरा ज्ञान बांटने आया,
  विद्यासागर...
- पंछी उड़ जायेगा होते ही भोर,
  पल में कट जायेगी, सांसों की ये डोर
  ल.. ला... ल.....
- प्रभु जी भक्ति फल देगी-2
  आज नहीं तो कल देगी-2
  जीने का संबल देगी, आज नहीं तो कल देगी
- होली खेले मुनिराज अकेले वन में होले खेले रे...
- हमें गुरुदेव तेरा सहाना न मिलता,
  भंवर में ही रहते किनारा न मिलता,
  दिखाई न देती अंधेरे में ज्योति, अगर गुरु न होते-2
- लागी लगन नहीं तोड़ना प्रभु जी मेरी...
  तेरे भरोसे मैंने बाग लगाया - मेरे भरोसे नहीं छोड़ना
- खेनी पडसी नैया म्हारो तू ही खेवनहार,
  माँझी बनकर गुरुवर अब तो कर दो बेडा पार।

सोरठा :-

- आया पर्व महान - जय जयकार-3
- लिया प्रभु अवतार - जय जयकार-3
- तेरी परम दिगम्बर मूरत को मैं हरदम निहारा करूँ
  रहूँ नहीं दूर...
  मेरे मन मन्दिर में आ जाओ मैं हरदम पुकारा करूँ,
  रहूँ नहीं दूर...
  हे नाथ कृपा कर दो मुझ पर, गुण तेरे ही गाया करूँ,
  रहूँ नहीं दूर...

- वीरा तेरे चरणों को नहीं छोड़ के जाना है,
  सारा जग झूँठा है, सच्चा तेरा ठिकाना है,
  वीरा तेरे चरणों में बस मेरा ठिकाना है
- माता-पिता-प्रभु-गुरु चरणों में प्रणाम बारम्बार,
  हम पर किया बड़ा उपकार...
  जिनकी गोदी में पलकर कहलाते, हम होशियार,
  हम पर किया बड़ा उपकार...
- स्वागत करते आज तुम्हारा-2
  आओ-2 मेरे प्रिय महाराज-मंगल स्वागत है...
  तुम धन्य बनो महमान की मंगल स्वागत है...
- भज ले प्रभू का नाम मनवा जप ले प्रभु का नाम-2
  बीत गयी अब आयु पूरी कुछ तो कर ले काम,
  मनवा जपले प्रभु का नाम
- जीवन मेरा भोगों में बिते, ऐसा न मैंने सोचा था,
  पाप कमा गठड़ी बांधुंगा, ऐसा न मैंने सोचा था...
  तो सोचा-सोचा ही करता था, पर काम नहीं कुछ कर पाया,
  पाप कमा...
- रोम-रोम से निकले गुरुवर...
- गुरुवर का आया है तार ये घर खाली करो
  आब न करो इन्तजार ये घर खाली करो
- जीवन की पहेली सुलझाने आया हूँ...
  अपने बड़े बाबा को मनाने आया हूँ।
- म्हारा वीर प्रभु जी की सुन्दर मूरत म्हारे मनभाई जी
- शिक्षा में बीता बचपन, दिक्षा में नो जवानी,
  गुरुदेव आपकी है, बड़ी प्यारी जिन्दगानी।
- छोटी सी उमर में, दिक्षा लेकर-2
  ज्ञान का दीप जला रखा है-2
  ज्ञानसागर जी ने सोच समझकर-2
  विद्यासागर नाम रखा है-2

- मेरी रसना तू गा,
  गा प्रभु के गुण गा,
  गा रे गा इसमें तेरा फायदा...
- मैं देखूं जिस ओर सखीरी,
  सामने मेरे सांवरिया
- तेरी परम दिगम्बर मुद्रा (मुरत) को प्रतिपल निहारा करूँ,
  रहूँ नहीं दूर...
- ऊपर से आया है तार, ये घर खाली करो,
  अब ना करो इंतजार, ये घर खाली करो...

ज्ञानोदय :-

- आशा कब दूर है मन से, कब दूर भक्त भगवन से-2
  ये बंधन तो, भक्ति का बंधन है, जन्मों का सम्बन्ध है
  सुरज कब दूर किरण से, खुशबू कब दुर पवन से
  ये बन्धन...
- इस जनम में ना मिले पर भव में मिलता है-2
  जल्दी-2 ना सही पर धीरे मिलता है-2
  अपने-अपने-2 कर्मों का फल सबको मिलता है
  एक पत्थर वो है जिस पर हम चलते हैं,
  एक पत्थर वो है, जिसकी पूजा करते हैं
  पर्वत और चट्टान से इक साथ निकलता है,
  अपनी-2.
- जब-जब भी इन्हें पुकारा, गुरुवर ने दिया सहारा,
  वो दूर नहीं है हमसें, बस याद करो इस मन से,
  ये गुरुवर तो बड़े ही दानी है, भक्तों का सहारा है.....
- वीर नाम अति प्यारा है कोई गा के देख ले-2
  आ जाते है वीर प्रभु, बुलाके देख ले...

- पूजा है तुमको पूजूंगा हरदम,
  तेरी ही चरणों में बीते सारा जीवन,
  तेरी पूजा रचाऊँगा,
  तेरे गुण गाऊँगा
- कैसे बने-2, तुम्हारे बिना बिगड़ी कैसे बनें...
- प्रभु जी आछी लागी रे थांसू प्रीत रे
  म्हारा हिवड़ा में जागी जगमग ज्योत प्रभु जी
  आछी लगी रे...
- तेरह की रात भर, माता त्रिशला के महल,
  बजते बेजनीयां देखो छन छन छन-2
- आओनी-2..... प्रभु जी ध्याऊँ मन से....
- आनो पड़सी ओ बाबा आणो पड़सी,
  थारां टाबरिया बुलावै, बाबा आणो पड़सी....
- नरतन रतन अमोल, इसे पानी में मत ड़ालो-2
  पूजन कर लो पुण्य कमालो, प्रभु जी के गुण गालो
  चलो रे सम्मेदशिखर चालो-2 श्री पार्श्वनाथ जी के दर्शन करने
  सम्मेद...
- दर्शन की अभिलाषा लेकर, आया रे सांवरिया...
- करता रहूँ गुणगान, मुझे दो ऐसा वरदान
- अपने शिखर जी का बड़ा सुन्दर नजारा है
  तीर्थ शिरोमणी ये हमें प्राणों से प्यारा है
  ऋषियों मुनियों ने तप करके,
  मधुवन को निखारा है

चौपाई :-

- चाँदनपुर के श्री महावीर,
  भज प्यारे तु श्री महावीर...
- लूट रहा-3, बड़े बाबा का खजाना लूट रहा।
  मिल गया-3, बाबा का ठिकाना
  मिट रहा-3 मेरे मन का अंधेरा मिट रहा
  देख लिया-3 मधुवन का नजारा

गीता/बारामासा/ज्ञानोदय/नरेन्द्र :-

- पूजा-पाठ रचाऊँ मेरे...
- रोम-रोम से निकले गुरुवर...
- आओनी-आओनी जिनजी...
- मेरे सर पर रख दो गुरुवर...
- जिसदेश में जिस वेश में...
- भला किसी का कर न सको तो...
- तुम जैसा मैं भी बन जाऊँ, ऐसा मैंने सोचा है,
  तुम जैसी समता पा जाऊँ, ऐसा मैंने सोचा है
  ..... विषय-वासना की जड़ गहरी
  काटो नाथ भरोसा है,
  तुम जैसी समता...
- जिनवाणी को नमन करों यह वाणी है भगवान कि,
  आदिनाथ से वीर प्रभु तक, चौबीसों भगवान कि,
  वन्दे जिनवरम्-3
- चेतो-चेतो जी सोयेड़ा सरदार, उमर थारी बीत गयी...
- नाम तुम्हारा तारणहारा...
- हे गुरुवर धन्य हो तुम...
- तेरे चरणों की धूल बाबा...
- सूरज कब दूर गगन से...
- एक बार आओजी महावीर म्हारा पावणा...
- मेरा जीवन कोरा कागज...
- ऐ मेरे वतन के लोगो...
- फल उगा लो मन के खेत में, महामंत्र के नाम की.
  अपनी सीट सुरक्षित कर लो, सीधे शिवपुर धाम की, वन्दे जिनवरम्

चौपाई / बेसरी :-

- जिंदगी में कुछ तो सुधार कीजिये... थोड़ा-2 गुरु से...
- जिस दिन ये पापी मन पावन, पापों-से बचता जीवन होगा
  भेष दिगम्बर साधु जैसा जीवन होगा...

- हूँ स्वतन्त्र निश्चल निष्काम...
- महावीर का आसरा चाहता हूँ,
  तेरे दर पर आया मुक्ति चाहता हूँ।
- मेरे दुःख के दिनों में वो बड़े काम आते हैं।
- ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाला है...
- झूम-झूम के-2, सब मिल करें है आज पूजा, प्रभु जी की झूम-झूम के...

भुजंगप्रयात / इन्द्रव्रजा / लक्ष्मीधरा :-

- णमोकार मंत्र जो निशदिन जपेगा-2
  अरहंतों को आऽऽऽऽ-2 नमन तू करले बंदे सब ये तेरा
  दुखड़ा मिटेगा, णमोकार...
- जैनी होकें पानी न छाना,
  हाये वीर रातों को खायें जाना...
- टिले वाले बाबा तेरी महिमा अपार है-2
  सदियों से तेरी होती जय जयकार है
  बीते दिनों में यहाँ पर समोशरण आया था-2
  मैंने न जाने कब कहां जन्म पाया था...
- महावीर स्वामी तेरा ही सहारा है,
  तेरे बिन दुनिया में कोई न हमारा है...
- प्रभु महावीर चले-2, घर-घर दीप जले-2
  प्रभु महावीर चले-2...

धत्ता :-

- हमको बुलाना हर साल बाबा, रखना हमारा खयाल बाबा...
- बाबा तेरे दर पर आये, और तेरे ही गुण गायें,
  जीवन को सफल बनायें,
  ये बाबा तो हमारा बाबा है, भक्तों का सहारा है...
- तू ज्ञान का सागर है, आनंद का सागर है,
  इसी आनंद के प्यासे हम...
- दर पर तेरे आये हैं, करने भावों से गुणगान,
  हे प्रभु वरदान दो चरणों में ही करें वास हम...

चामर छंद/भगवान पार्श्वनाथ पूजा :-

- दयालु प्रभु से दया मांगते हैं, अपने दुःखों की दवा मांगते हैं...
- णमोकार मंत्र जो निशदिन जपेगा
  होगा मालामाल वो तो आऽऽऽ उसका खजाना रातों रात भरेगा
  णमोकार मंत्र...
  अरहंतों को आऽऽऽ-2 नमन तू कर ले वंदे तेरा दुःख मिटेगा...
- करके महर, जरा देख ले इधर,
  गये जीवन की माला के मोती बिखर
  तुम हो प्रभु जी कहाँ-2
  हम बेखबर, भूले तेरी डगर, गये जीवन की राहों में कांटे बिखर,
  तुमको ढूँढे कहाँ-2
- तर्ज - आने से जिसके आये बहार...
  होना तुझे भवसागर के पार, पारस की वाणी को मन में उतार
  दुनिया दिवानी रे सुन ओ बावरे
  धर्म करो, पापों से डरो गर बिगड़ी बनाती है, सुन ओ बावरे
  ये दुनिया पानी रे, सुन ओ बावरे...
- आ भी जाओ दिल पुकारे पारस प्रभु जी-2
  आके दो सहारा पारस प्रभु जी, आ भी जाओ...
  तुम हो सबके प्यारे - पारस प्रभु जी...
- काहे बैर करे तू इंसान, तू है दो दिन का महमान,
  काहे झूठी दिखावे शान, तू है दो दिन का महमान
  कर ले अपनी पहचान, तू है दो दिन का महमान...
- नैना भर आये रे छवि को निहार के...
- तुम तो ठहरे वितरागी, हमें कब बनाओगे...
- लगे मन को प्यारी, मूरत तुम्हारी,
  मूरत तुम्हारी, प्रभु सुरत तुम्हारी
  लगे मन.....

- चरणन में चंदा सितारे-2
  तुम्हें जिनदेव सुबह शाम पुकारे...
- दर्शन दीज्यो जी सांवरीयाँ दर्शन दिज्यो जी,
  म्हारो मनवा नाचे गावे रे की दर्शन...
- प्रभु पार्श्व तेरी महिमा, दुनिया से निराली है,
  सुख देने वाला तू, तेरी शान निराली है-2
  तु सुख का सागर है तू है अर्न्तयामी,
  तेरी सांवली सी मुरत मुझको है बड़ी प्यारी-2
  मेरी भवदधी से नैया तुम्हें पार लगानी है।

कल्याणक :-

- चली-चली रे ऊमर बीत चली रे
  न किया रे सत्संग, प्रभु मिलने काठंग, पांच पापों ने काया तेरी छली रे
  ओ चली-2 रे ऊमर बित चली रे...
  जाये छोड़ घर बार, बेटा बेटी और नार जब मौत आ सिराने तेरे खड़ी है
  ओ चली-2 रे ऊमर...
- ऐ जैन धर्म के लोगों, जरा याद करो उस दिन को,
  जिओ और जीने दो का सिद्धान्त बताया उनको

सुन्दरी :-

- जीवन के किसी भी पल में...
- रंग मा रंग मा...
- ऊँचे-2 शिखरों वाला...
- उदक चन्दन तन्दुल...
- जीवन की पहेली...

अडिल्ल छंद :-

- गुरुवर का चेहरा सुहाना लगता है...
- संत शिरोमणि का सारा जग दिवाना...
- दिल के अरमां आंसुओं में बह गये...
- साजन मेरा उस पार है...

सखी छंद :-

- बुलाले अपने पास ऊमरिया रह गई थोड़ी...
- तुम्हें सूरज कहूं या चंदा...
- बधाई देवा चालो...
- दुनिया में सबसे प्यारा, यह आतमा हमारा...

त्रोटक :-

- बड़े बाबा बड़े बाबा है जिनका नाम।
  छोटे बाबा छोटे हैं जग में महान।।
  इनके चरणों में आना आके माथा झुकाना,
  बड़े-बड़े भी संकट टलते बड़े-बड़े हो जाते काम।।
- दुनिया में संत हजारों है...

पंचमेरु/सोलहकरण

- आस है तेरे दर्शन की, प्रभु चरणन स्पर्शन की...
  आऽऽऽऽ ऽऽऽ, ऽऽ, ऽऽ .....
- चरणों में समर्पित हूँ, मुझे ज्ञान का धन दे दो,
  बदले में प्रभु मेरा, तन मन धन सब ले लो...
- मेरी नाव के खिवैया अपनी शरण में ले ले रे,
  अपनी शरण में ले ले, हम रह गये 'अकेले'
- हे गुरुवर धन्य हो तुम कितना परिषह सहते हो...
  हे प्रभुवर धन्य हो तुम, तुम अपने में रहते हो...
  मन मन्दिर में आ जाओ, इन नैनों में समा जाओ...
- णमोकार ध्याओ-2
  है इसके सिवा ना, शरण और कोई-2
  इसी के सहारे कटे पाप सारे...
- मनहर तेरी मुरतीया, मस्त हुआ मन मेरा
  तेरा दर्श पाया, पाया तेरा दर्श पाया...
- किसको विपद सुनाऊँ, हे नाथ तू बता दे
  तेरे सिवा ना कोई-2 जो कष्ट को मिटा दे,
  किसको...

– जब तेरी डोली निकाली जायेगी,
बिन मुहुरत के उठाली जायेगी,
ऐ मुसाफिर क्यों पसरता है यहाँ,
ये मिला तूझको किराये का मकान
कोठरी खाली कराली जायेगी...

नरेन्द्र : – जाग जरा औ सोये मुसाफिर...
प्रभु का ले लो सहारा-2
– भाई रे भाई पाप को तज यदि सच्चा सुख है पाना,
छोड़ जगत का गौरखधंधा, प्रभु चरणों में आना

बाहुबली : – प्रभु विंध्यगिरी पर्वत पर मेरी कुटिया बन जावें
जब खिड़की खोलूँ तो तेरा दर्शन हो जाये...
– गुरुवर जी बड़े प्यारे है, मुनिवर जी बड़े प्यारे हैं,
छोटे-छोटे हम बच्चो, प्यारे-2 हम बच्चों के,
वे ही एक सहारे हैं, गुरुवर...

द्रव्यआठों : पतित पावन हो तुम भगवन्, मेरी फरियाद सुन लेना,
तेरे चरणों में मस्तक है, इसे अपना बना लेना...

कुछ अन्य तर्ज :
– तुम्हारे प्यार ने गुरुवर हमको तुमसे जोड़ा है,
तुम्हारे प्यार के बल पर सभी भोगों को छोड़ा है...
– गुंजे तीन लोक में जय जयकार – जैन धर्म की जय बोलो,
जिससे भारत की है पहचान – जैन धर्म की जय बोलो,
हो सत्य अहिंसा अपनी शान – जैन धर्म की जय बोलो,
दुनिया करती जिनका सम्मान – जैन धर्म की जय बोलो,

विशेष : इसके अतिरिक्त आपको जो भजन की पंक्तियाँ याद हो उन्हें भी ले सकते हैं।

देवपूजन

साभार : जिन सरस्वती

लेखक : मुनिश्री प्रशांतसागर

''जोवीतराग सर्वज्ञ और हितोपदेशी होतेहैं, उन्हें आप्त कहतेहैं, आप्त कोदेव भी कहतेहैं। ऐसेसच्चेदेव की श्रावक पूजन करता है। अतः इस अध्याय में देवपूजन विधि का वर्णन है।''

१. **पूजन का शाब्दिक अर्थ क्या है ?**

'पू' धातु से पूजा शब्द बना है। पू का अर्थ अर्चना करना है। पञ्चपरमेष्ठियों के गुणों का गुणानुवाद करना पूजा कहलाती है।

२. **पूजा के कितने भेद हैं ?**

पूजा के दो भेद हैं-

१. **द्रव्य पूजा** – जल, चंदन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, फल और अर्घ चढ़ाकर भगवान् का गुणानुवाद करना द्रव्य पूजा है।

२. **भाव पूजा** – अष्ट द्रव्य के बिना परम भक्ति के साथ जिनेन्द्र भगवान् के अनन्त चतुष्टय आदि गुणों का कीर्तन करना भाव पूजा है।

३. **दर्शन, पूजन, अभिषेक आदि क्यों करते हैं ?**

तत्त्वार्थ सूत्र के मङ्गलाचरण के अन्तिम पद में कहा है ''वन्दे तद् गुणलब्धये'' हे भगवान्! जैसे गुण आप में हैं, वैसे गुणों की प्राप्ति मुझे भी हो। इससे आपके दर्शन, पूजन, अभिषेक आदि करते हैं।

४. **पूजन के और कितने भेद हैं ?**

पूजा के पाँच भेद हैं-

१. **नित्यमह पूजा** – प्रतिदिन शक्ति के अनुसार अपने घर से अष्ट द्रव्य ले जाकर जिनालय में जिनेन्द्रदेव की पूजा करना, चैत्य और चैत्यालय बनवाकर उनकी पूजा के लिए जमीन, जायदाद देना तथा मुनियों की पूजा करना नित्यमह पूजा है।

२. **चतुर्मुख पूजा** -मुकुटबद्ध राजाओं के द्वारा जो जिनपूजा की जाती है उसे चतुर्मुख पूजा कहते हैं, क्योंकि चतुर्मुख बिम्ब विराजमान करके चारों ही दिशा में पूजा की जाती है। बड़ी होने से इसे महापूजा भी कहते हैं। ये सब जीवों के कल्याण के लिए की जाती है, इसलिए इसे सर्वतोभद्र भी कहते हैं।

३. **कल्पवृक्ष पूजा** -याचकों को उनकी इच्छानुसार दान देने के पश्चात् चक्रवर्ती अर्हन्त भगवान् की जो पूजन करता है, उसे कल्पवृक्ष पूजा कहते हैं।

४. **अष्टाह्निका पूजा** -अष्टाह्निका पर्व में जो जिनपूजा की जाती है, वह अष्टाह्निका पूजा है।

५. **इन्द्रध्वज पूजा** -इन्द्रादिक के द्वारा जो जिनपूजा की जाती है, वह इन्द्रध्वज पूजा है।

(का.अ.टी., ३९१)

५. **पूजा के पर्यायवाची नाम कौन-कौन से हैं ?**

याग, यज्ञ, क्रतु, सपर्या, इज्या, अध्वर, मख और मह। ये सब पूजा के पर्यायवाची नाम हैं।

६. **पूजा के कितने अङ्ग हैं ?**

पूजा के छः अङ्ग हैं-अभिषेक, आह्वान, स्थापना, सन्निधिकरण, पूजन और विसर्जन।

७. **अभिषेक किसे कहते हैं ?**

''अभि मुख्यरूपेण सिंचयति इति अभिषेकः''। सम्पूर्ण प्रतिमा जल से सिञ्चित हो। इस प्रकार प्रासुक जल की धारा जिन प्रतिमा के ऊपर से करना अभिषेक है।

८. **अभिषेक कितने प्रकार का होता है ?**

अभिषेक चार प्रकार का होता है -

१. **जन्माभिषेक** - सौधर्म इन्द्र तीर्थङ्कर बालक को पाण्डुक शिला पर ले

जाकर करता है।

२. **राज्याभिषेक** -जो तीर्थङ्कर राजकुमार को राज्यतिलक के समय किया जाता है।

३. **दीक्षाभिषेक** -यह तीर्थङ्कर को वैराग्य होने पर दीक्षा लेने के पूर्व किया जाता है।

४. **चतुर्थाभिषेक** - जिनबिम्ब प्रतिष्ठा में ज्ञान कल्याणक के पश्चात् किया जाता है, इस चतुर्थाभिषेक को ही जिनप्रतिमा अभिषेक कहते हैं। जो पूजन से पूर्व में किया जाता है।

विशेष :-येचारों अभिषेक मनुष्य गति की अपेक्षा सेहैं।

देवाभिषेक - देवों का होता है। जब स्वर्ग में किसी देव की उत्पत्ति होती है तो अन्य देव आकर उसका जन्म महोत्सव मनाते हैं और उसे एक सिंहासन पर आरूढ़ करके उसे स्नान कराते हैं, यह देवाभिषेक है।

(कर्म जीवन का - मुनिश्री प्रमाणसागर)

इस प्रकार आगम में पांच प्रकार के अभिषेक का भी कथन है।

९. **जिन प्रतिमा अभिषेक कब से चल रहा है ?**

जिन प्रतिमा अभिषेक अनादिकाल से चल रहा है, क्योंकि तीर्थङ्करों के पञ्चकल्याणक एवं अकृत्रिम चैत्यालय अनादिनिधन हैं। अनादिकाल से चतुर्निकाय के देव अष्टाह्निका पर्व में नंदीश्वरद्वीप जाकर अभिषेक एवं पूजन करते हैं। इस प्रकार अभिषेक की परम्परा अनादिनिधन है।

आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी नंदीश्वरभक्ति में लिखते हैं -

भेदेन वर्णना का सौधर्मः स्नपनकर्तृतामापन्नः।

परिचारकभावमिताः शेषेन्द्रारुन्द्रचन्द्र निर्मलयशसः॥ १५॥

अर्थ :- उस पूजा में सौधर्म इन्द्र प्रमुख रहता है, वही जिन प्रतिमाओं का अभिषेक करता है। शेष इन्द्र सौधर्म इन्द्र के द्वारा बताए गए कार्य करते हैं।

१०. **अभिषेक में वैज्ञानिक कारण क्या हैं ?**

प्रत्येक धातु की अलग-अलग चालकता होती है। अतः जब धातु की प्रतिमा पर जल की धारा छोड़ते हैं तब धातु के सम्पर्क से जल का आयनीकरण होता है, उस आयनीकरण से युक्त जल अर्थात् गन्धोदक को उत्तमाङ्ग में लगाने से शरीर में स्थित हीमोग्लोबिन में वृद्धि करते हैं।

११. गंधोदक वंदनीय क्यों है ?

जिनबिम्ब प्रतिष्ठा की विधि में, पञ्चकल्याणक के माध्यम से, तप कल्याणक के दिन, अङ्गन्यास एवं ज्ञान कल्याणक के दिन बीजाक्षरों का आरोपण एवं मन्त्रन्यास विधि में प्रतिमा में मन्त्रों का आरोपण दिगम्बर मुनि के द्वारा किया जाता है। जलाभिषेक की धारा से जो जल प्रतिमा पर गिरता है, उन मन्त्रों एवं अभिषेक के समय उच्चारित मन्त्रों का प्रभाव जल में आ जाता है, इससे वह वंदनीय हो जाता है। (पु.)

१२. आह्वान, स्थापना, सन्निधिकरण क्या है एवं किस प्रकार किया जाता है ?

आह्वान-भगवान् के स्वरूप को दृष्टि के समक्ष लाने का प्रयास करना आह्वान है।

स्थापना-उनके स्वरूप को हृदय में विराजमान करना स्थापना है।

सन्निधिकरण-हृदय में विराजे भगवान् के स्वरूप के साथ एकाकार होना सन्निधिकरण है। सीधे दोनों हाथों को सही मिलाएं और अनामिका अङ्गुली के मूल भाग में अंगूठा रखकर आह्वान किया जाता है, उन्हीं हाथों को पलट लेना स्थापना है एवं अंगूठा ऊपर रखकर मुट्ठी बांध लें और दोनों अंगूठों को हृदय पर लगाना इसके बाद ठोना पर पुष्प क्षेपण करना चाहिए। आह्वान, स्थापना के बाद पुष्प क्षेपण नहीं करना चाहिए। पुष्पों की संख्या निश्चित नहीं है, जितने चाहें, बिना गिने क्षेपण कर सकते हैं।

१३. ठोना की आवश्यकता क्यों है ?

१. पूजा का संकल्प किया है, उसको पूर्ण करने के लिए जब तक पूजा पूर्ण नहीं होगी, तब तक नहीं उठेंगे अर्थात् ठोना पूजा के संकल्प को याद दिलाता रहता है।

२. पावर हाउस से करेंट डायरेक्ट घर में नहीं आता है, ट्रांसफार्मर से आता है।

उच्च शक्ति से निम्न शक्ति में परिवर्तित होकर आता है। ऐसे ही भगवान् से सम्बन्ध जोड़ना है तब ठोना को माध्यम बनाया जाता है। ठोना याद दिलाने के लिए है कि हमने भगवान् से सम्बन्ध जोड़ा है।

१४. ठोना में क्या बनाना चाहिए ?

ठोना में स्वस्तिक कमल बनाना चाहिए।

१५. पूजन में अष्ट द्रव्य क्यों चढ़ाते हैं एवं वह हमें क्या संदेश देते हैं ?

१. **जल** - जल बाहरी गंदगी को दूर करने वाला है किन्तु आपके गुण रूपी जल मेरे राग-द्वेष रूपी मल को दूर करने वाले हैं। आत्मा में लगे ज्ञानावरणादि कर्म की रज को धोने के लिए चढ़ाया जाता है।

जल हमें यह संदेश देता है कि हम उसकी तरह सभी के साथ घुल - मिलकर जीना सीखें एवं जल की तरह तरल एवं निर्मल होना सीखें।

२. **चंदन** - इस चंदन से तो तात्कालिक शांति होती है किन्तु आपकी अमृत वाणी शारीरिक और मानसिक दाह को सदा-सदा के लिए नष्ट कर देती है। मिलावट के इस युग में आज चंदन के स्थान पर हल्दी चल रही है, जो गर्म होती है, इससे संसार रूपी ताप का नाश नहीं हो रहा है अतः चंदन के स्थान पर हल्दी नहीं चढ़ाना चाहिए।

चंदन हमें यह संदेश देता है कि उसकी तरह सभी के प्रति शीतलता अपनाएं एवं चंदन के वृक्ष को कोई काटे तो वह सुगंध ही देता है। वैसे हम भी हो जाएँ। कोई मुझे मारे तो उसे सुगंध के समान मीठे वचन दे सकें।

३. **अक्षत** - हे भगवान् मुझे यह क्षत-विक्षत पद नहीं चाहिए मुझे तो आप जैसा शाश्वत पद प्राप्त हो जाए जिससे मुझे चौरासी लाख योनियों में न भटकना पड़े।

अक्षत (चावल) यह संदेश देता है कि धान का छिलका हटाए बिना अक्षत प्राप्त नहीं होता है उसी प्रकार बाहरी परिग्रह छोड़े बिना हमें आत्मतत्त्व की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

४. **पुष्प** -हे भगवान् ! इस काम दाह से सारा संसार पीड़ित है किन्तु आपने

ऐसे काम रूपी विजेता को भी जीत लिया है इसलिए मैं भी उस काम भाव पर विजय प्राप्त करने के लिए आपके चरणों में पुष्प चढ़ाता हूँ, आप अवश्य ही मेरी भावना साकार करें।

पुष्प यह संदेश देता है कि उसका जीवन दो दिन का है फिर उसे मुरझा जाना है। टूट कर गिर जाना है। हमारा जीवन भी दो दिन का है फिर यह देह मुरझाकर गिर जाएगी। यदि दो दिन के जीवन को शरीरगत क्षणिक कामवासनाओं में चला जाने देंगे तो मुरझाने और टूटकर गिर जाने के अलावा हमारे हाथ में कुछ भी नहीं रहेगा। इसलिए स्पर्श, रस, गंध, वर्ण आदि की सभी वासनाओं से मुक्त होने का प्रयास करना चाहिए।

५. **नैवेद्य**-मैंने इस क्षुधारोग का नाश करने के लिए दिन-रात भक्ष्य-अभक्ष्य पदार्थों का सेवन किया। फिर भी इस तन की भूख शांत नहीं हुई। यह तो अग्नि में घी डालने के समान दिनों-दिन बढ़ती जाती है किन्तु ऐसे क्षुधा रोग को आपने नष्ट कर दिया है। ऐसी शक्ति मुझे भी प्राप्त हो, जिससे मैं भी हमेशा के लिए क्षुधा रोग नष्ट कर सकूँ।

नैवेद्य यह संदेश देता है कि मैं स्वयं नष्ट होकर दूसरों को जीवन देता हूँ। हम इतना कर लें कि दूसरे प्राणी भी जीवन जी सकें। हम उनके लिए बाधक न बनें।

६. **दीप** -यह जड़ दीपक तो बाह्य जगत् के अंधकार को नष्ट करता है, इसमें तो बार-बार तेल-बत्ती की आवश्यकता होती है और दिया तले अंधेरा ही रहता है। लेकिन आपका केवलज्ञान रूपी दीपक स्व-पर प्रकाशी, तेल और बत्ती से रहित, अखण्ड शाश्वत प्रकाशवान है। मेरे घट में भी केवलज्ञान की ज्योति जल जाए इसलिए मैं यह नश्वर दीप चढ़ा रहा हूँ।

दीप यह संदेश देता है कि मैं जलकर भी दुनिया को प्रकाश देता हूँ तो हम भी यह शिक्षा लें कि कष्ट सहन कर दूसरों को सेवा प्रदान करें।

७. **धूप**-यह धूप तो बाह्य जगत् के वातावरण को स्वच्छ करती है। परन्तु प्रभो

आपने तो अष्ट कर्मों की धूप को ही नष्ट कर दिया है। मेरे भी अष्ट कर्म नष्ट हो जाएं मुझे भी वह अष्ट कर्मों से रहित अवस्था प्राप्त हो। इससे धूप चढ़ाता हूँ।

धूप से संदेश ले सकते हैं कि धूप अपनी सुगंध अमीर-गरीब और छोटे-बड़े का भेद किए बिना सभी के पास समान रूप से पहुँचाती है। ऐसे ही हम अपने जीवन में भेदभाव को छोड़कर सर्वप्रेम, सर्वमैत्री की सुगन्ध फैलाते रहें।

८. **फल** - हे प्रभु! इस संसार के सारे फल तो नश्वर हैं, अस्थिर हैं, छूट जाने वाले हैं। इन फलों को खाने से तात्कालिक आनंद आने के उपरान्त दु:ख ही हाथ लगता है। मुझे शाश्वत मोक्ष रूपी फल प्राप्त हो जाए इसलिए आपके चरणों में फल चढ़ाता हूँ।

फल यह संदेश देता है कि सांसारिक फल की आकांक्षाएँ व्यर्थ हैं, क्योंकि वे तो कर्माश्रित हैं। अच्छे का अच्छा, बुरे का बुरा फल मिलता है। ध्यान रहे फल कभी भी फल नहीं चाहता है, वह कर्तव्य करता है। हम भी कोई कार्य करें तो कर्त्तव्य समझकर करें, फल की अपेक्षा न करें।

अर्घ - उस अनर्घ पद के सामने इस अर्घ का क्या मूल्य है, फिर भी भक्ति वशात् मैं उस अनर्घ पद को प्राप्त करने के लिए यह अर्घ चढ़ा रहा हूँ। अर्घ हमें एकता का संदेश देता है, उसमें आठों द्रव्य एक हैं हम सब भी एक हो जाएँ तो बड़े-से-बड़ा कार्य भी शीघ्र हो जाता है।

जयमाल -पञ्च परमेष्ठी, नवदेवताओं की अष्ट द्रव्य से पूजा के बाद विशेष भक्ति व श्रद्धा युक्त हो गुणों का स्मरण करना एवं गुणानुवाद करना, जयमाल है।

१६. अष्ट द्रव्य हमें कैसे चढ़ाना चाहिए?

जन्म, जरा, मृत्यु का नाश करने के लिए जल की तीन धारा छोड़ना चाहिए। चंदन चढ़ाते समय एक धारा छोड़ना चाहिए। अक्षत दोनों मुट्ठी बाँधकर अंगूठा अंदर रखकर चढ़ाना चाहिए। पुष्प दोनों हाथों की अंजुलि मिलाकर नीचे गिराते

हुए छोड़ना चाहिए। नैवेद्य प्लेट में रखकर चढ़ाना चाहिए। दीप प्लेट में रखकर चढ़ाना चाहिए। धूप मध्यमा, अनामिका और अंगुष्ठ मिलाकर धूप घट में ही छोड़ना चाहिए। फल प्लेट में रखकर चढ़ाना चाहिए। अर्घ प्लेट में रखकर दोनों हाथ लगाकर चढ़ाना चाहिए।

थाली में ऊपर अर्ध चंद्राकार बिन्दु सहित उसके नीचे तीन बिन्दु तथा उसके नीचे स्वस्तिक बनाना चाहिए।

स्वस्तिक में प्रथम नीचे से ऊपर रेखा ऊर्ध्वगति प्राप्ति की भावना से लोक नाड़ी या संसार रेखा मानकर खीचें। आड़ी रेखा जन्म-मरण की रेखा के रूप में खींचे। चारों मोड़ चार गतियों के प्रतीक हैं। अर्थात् लोक नाड़ी में जन्म मरण करके चारों गतियों में परिभ्रमण कर रहे हैं। चार बिन्दु चारों अनुयोग के प्रतीक हैं, जिससे ज्ञान प्राप्त करके मोक्षमार्ग रत्नत्रय रूप में तीन बिन्दु बनाते हैं। इस रत्नत्रय धारण की भावना के साथ सिद्धशिला की प्राप्ति की भावना से सिद्ध शिला एवं बिन्दु (बिन्दु सिद्ध भगवान् के प्रतीक) बनाते हैं।

१८. विसर्जन क्या है?

विश्वशान्ति की मङ्गल भावना के साथ शान्ति पाठ पढ़कर विसर्जन किया जाता है। विसर्जन का तात्पर्य पूजन के पश्चात् भगवान् का विसर्जन नहीं है। बल्कि पूजन में होने वाली त्रुटि (गलती) के प्रति क्षमायाचना करना है। पूजन समाप्ति पर विसर्जन पाठ पढ़ें-बिन जाने वा जानके --------- क्षमा करहुँ राखहुँ मुझे देहु चरण की सेव, पढ़ना चाहिए।

१९. कितने गति के जीव पूजन करते हैं?

तीन गति के जीव पूजन करते हैं - मनुष्यगति, देवगति एवं तिर्यञ्चगति।

२०. पूजा के छः प्रकार कौन से हैं बताइए?

१. **नाम पूजा**-अरिहंतादि का नाम उच्चारण करके विशुद्ध प्रदेश में जो पुष्प क्षेपण किए जाते हैं, वह नाम पूजा है।
२. **स्थापना पूजा**- आकारवान पाषाण आदि में अरिहंत आदि के गुणों का आरोपण करके पूजा करना स्थापना पूजा है।
३. **द्रव्य पूजा**- अरिहंतादि के उद्देश्य से जल, गंध, अक्षत आदि समर्पण करना द्रव्य पूजा है।
४. **क्षेत्र पूजा**- जिनेन्द्र भगवान् के जन्म कल्याणक आदि पवित्र भूमियों में पूर्वोक्त प्रकार से पूजा करना क्षेत्र पूजा है।
५. **काल पूजा**-तीर्थङ्करों के कल्याणकों की तिथियों में भगवान् का अभिषेक, पूजा आदि करना काल पूजा है।
६. **भाव पूजा**-मन से अरिहंतादि के गुणों का चिन्तन करना भाव पूजा है।

२१. पूजन के लाभ बताइए?

आचार्य श्री समन्तभद्र स्वामी ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में कहा है कि पूजन सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाली और काम विकार को भस्म करने वाली तथा समस्त दुःख को दूर करने वाली है।

२२. रात्रि में पूजन करना चाहिए या नहीं?

जिस प्रकार रात्रिभोजन का निषेध है, उसी प्रकार रात्रि पूजन का भी निषेध है।

भजन-1

कितना प्यारा तेरा दुआरा, यही बिता दूं जीवन सारा
तेरी दरश की लगन से, हमें आना पड़ेगा इस दर पर दोबारा।

भव-भव के दुख हरने वाले, सबको सुख में करने वाले,
गुण मे तेरी धारा हमें.....
दिनभर तेरी याद सताती, छवी तेरी दिल में आ जाती,
तेरी अनुपम धारा, हमें.....
रात-रात भर नींद न आती, सपनों मे पूजा हो जाती,
कैसा अद्‌भुत नजारा, हमें.....
कमलो को विकसाने वाले, धर्म प्रकाश दिखाने वाले,
तू ही जग उजियारा, हमें.....
प्रभु तुम से अब कुछ नहीं चाहुँ जनम-जनम तेरे दर्शन पाऊँ,
मन में यही विचारा, हमें.....
भव्य जनों के हृदय खिलाते, जो भी तेरे दर पर आते,
तू ही अजब सितारा, हमें.....
विष को निर्विष करने वाले, राग-द्वेष को तजने वाले,
अन्जन पापी तारा, हमें.....
नैया मोरी पार लगाओ, हमको अपने पास बुलाओ,
तू ही हमको प्यारा, हमें.....
वीतरागता हमें दिखा दो, मुझसे मेरा मिलन करा दो,
तूने सब को तारा, हमें.....
तुम ही हो बस एक सहारे, जग में रहते जग से न्यारे,
देना जगत किनारा, हमें.....
वीतरागता है झर-झर झरती, तुझे देख खुश होते नगरी,
तू ही अजब सितारा, हमें.....
महावीर जिन संकट हारी, नैया सबकी पार उतारी,
भव का दुःख निवारा, हमें.....

नर सुर इन्द्र करे सब पूजा, और नहीं है कुछ भय दूजा,
तुझमें ज्ञान आपारा, हमें.....
अपनी जैसी दृष्टि बनाओ, जिन गुण संपत्ति हमें दिखाओ,
देकर हाथ सहारा, हमें.....
पापी भी यदि ध्यान लगावे, भव-भव के बंधन कट जावे,
अंजन को भी तारा, हमें.....
प्रभु चरणों में ध्यान लगाऊँ, निज आतम हित में लग जाऊँ,
नरतन मिले दुबारा, हमें.....

भजन-2

रोम-रोम से निकले गुरुवर, नाम तुम्हारा-2
ऐसा दो वरदान की फिर ना पाऊं जनम दुबारा, रोम.....

प्रेम किया जब जग से, जग ने ही ठुकराया,
तेरा प्रेम न जाना, दुःख को गले लगाया
हम को लगता है, इस युग में, तू ही एक सहारा, रोम...
माता-पिता तुम मेरे, सच्चे मित्र सहारे,
सारी दुनिया छोड़ी, आये तेरे द्वारे,
भटक रहे है, भव सागर में, पाया नहीं किनारा, रोम.....
दिल से निश दिन गुरुजी, ज्योति जलाऊँ तेरी,
कब तक पूरी होगी, मन की आशा मेरी,
इन नैनों से तेरी ज्योति का, देखूँ अजब नजारा, रोम.....
छोड़ न पाऊँ प्रभु जी, पांच ठगो का डेरा
किस विध पाऊँ आखिर, प्रभु जी दर्शन तेरा,
भटक न जाये ये बालक, प्रभु जी देना आप सहारा, रोम-रोम.....

भजन-3

धीरे-धीरे चलो जी मंदिर, भगवन के गुण गाने को,
बढ़ते चलो हजारो लोगो, वीतरागता पाने को।

घर से मेरे भाव बने, मैं मंदिर जी में जाऊँगा
वीतराग के दर्शन करके, मन ही मन हर्षाऊँगा,
पारस प्रभु का दर्शन करता, पाप अनन्त मिटाने को,
बढ़ते चलो.....
भक्ति भाव से दर्शन करके, कूप से जल भर लाऊँगा,
दोनो हाथ में कलशा लेकर प्रभु का न्हवन कराऊँगा,
ऐसा भव्य जीव ही करते, अपने दुःख मिटाने को,
बढ़ते चलो.....
थाल मे अष्टदरब को लेकर, पूजनविधी को रचाऊँगा,
भगवन के गुण पाने को मैं, गुणाराधन गाऊँगा,
देव शास्त्र गुरु पूजन करता, रत्नत्रय गुण पाने को,
बढ़ते चलो.....
हे प्रभु आप तो केवलज्ञानी, तीनो लोक विजेता हो,
हे प्रभु आप तो सिद्ध स्वरूपी, मुक्ति पथ के नेता हो,
मेरा मुझसे मिलन करा दो, मंजिल अपनी पाने को,
बढ़ते चलो.....
हे प्रभु चरण करल द्वय तेरे, मेरे हृदय रहे पल-पल,
मुक्ति ना पा जाऊँ भगवन, कर दू नाश करम दल मल,
सम्यक् बोध खिला हो उर में, मरण समाधि पाने को,
बढ़ते चलो.....

भजन-4

जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाए रे।
होनी अनहोनी हो हो... होनी अनहोनी
कब क्या घट जाये रे।।
जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाए रे।।
जितना भी कर जाओगे, उतना ही फल पाओगे।
करनी जो कर जाओगे, वैसा ही फल पाओगे।
नीम के तरु में हो हो.....
नीम के तरु में, नहीं आम दिखाए रे।।
जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाए रे...
चंद दिनों का जीवन है, इसमें देखो सुख कम है
जन्म सभी को मालूम है, लेकिन मृत्यु से गाफिल है...
जाने कब तन से हो हो...
जाने कब तन से, पंक्षी उड़ जाए रे।।
जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाए रे।।
किसको माने अपना है, अपना भी तो सपना है।
जिसके लिए माया जोड़ी, क्या वो तेरा अपना है...
तेरा ही बेटा हो हो...
तेरा ही बेटा, तुझे आग लगाए रे।।
जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाए रे।।

भजन-5

कर लो जिनवर का गुणगान, आई मंगल घड़ी।
मंगल घड़ी.....

रात गमाई सोयकर, दिवस गमायौ खाय।
हीरा जनम अमोल यह, कौड़ी बदले जाय।
कर लो.....
मेरी लक्ष्मी खान कौ, कुटुम्बी हते अनेक,
अब इस विपत वियोग में, कोई न दीखें एक,
कर लो.....

भजन-6

हे गुरुवर धन्य हो तुम कितना परिषह सहते हो,
सर्दी, गर्मी या हो बरसात, तुम अपने में रहते हो,
समता रस को पीते हो, जग से कुछ नहीं कहते हो,
हे गुरुवर.....
महाऋषि आचार्य श्री ने कैसा संघ रचाया
निर्देशन लेने को चरित्र, खुद द्वार पर आया,
संयम ही जीवन है, प्रवचन में कहते हो,
हे गुरुवर.....
आदिनाथ की कृपा देखो, महावीर की छाया,
पारस रूपी विद्या पाकर, कुंदन होती काया
भक्तों को हे गुरुवर, छोटे बाबा लगते हो,
हे गुरुवर.....
गंगा और नर्मदा जैसी, लगे आर्यिका माता,
देख दृष्टिमय जनम-जनम का, मैल सभी धुल जाता
ज्ञान नदी बनकर के सारे, विश्व में बहते हो,
हे गुरुवर.....
यह की ऐसी किरणें फैली जय जयकार हुआ है,
आचार्य श्री के दर्शन से मोहित संसार हुआ है,
प्रभु जैसा बने हम सब, सब जीवों से कहते हो,
हे गुरुवर.....

सदा सत्य जो बोलेगा - सुख का गेट वो खोलेगा।
आपस में जो लड़ेगा - कुत्ता बनना पड़ेगा।

भजन-7

रंगमा-रंगमा-रंगमा रे,
प्रभु थारा ही रग में रंग गयो रे।
आया मंगल दिन मंगल अवसर,
भक्ति मा थारी मे मैं नाच रह्यो रे
प्रभु थारा.....
गाओ रे गाना आतम राम का,
आतम देव बुलाई रह्यो रे,
प्रभु थारा.....
समयसार में कुन्द-कुन्द देवा,
भगवान तुम्हे बुलाए रह्यो रे,
प्रभु थारा.....

भजन-8

डोली वाले कहते हैं, हर एक से बाबु जी,
सांवलियाँ पारसनाथ शिखर पे भला विराजै जी,
भला विराजै जी.....
लालटेन हाथों में लेकर चले वो ऊँची गैल,
काँधे पर रखकर के डोली, तुरतही बने गुलेल,
बडे प्यार से ऽऽऽ बोले बाबु चलीयो बाबुजी,
सांवलियाँ.....
हाथ उठाकर कहे वो देखो चन्दा प्रभु की टोंक,
पकी उमर डोली से देखो तब मन्दिर की ओर
समा देख वह ऽऽऽ तुरत कहे, मन रखियो बाबुजी
सांवलियाँ.....
तन मन मैला माटी जैसा कंचन जैसी काया,
अंग लपेटो फटी चीखरा, ता में कुरूप समाया,
जल मन्दिर पे ऽऽऽ कहें की हम तो सतुबा खाबे जी,
सांवलियाँ.....

भजन-9

मंत्र णमोकार हमें प्राणों से प्यारा,
यह है वो जहाज, जिसने लाखों को तारा
मन्त्र.....
णमो अरिहंताणं..... णमो.....
अरिहंतों को नमन हमारा, अशुभ कर्म अरि हनन करें-2
सिद्धों के सुमिरन से आत्मा, सिद्ध क्षेत्र को गमन करे-2
भव-भव में ऽऽऽ नहीं, भ्रमूं दुबारा,
मन्त्र.....
इसी मंत्र से नाग और नागिन, पद्मावती धरणेन्द्र हुये-2
सेठ सुदर्शन को शुली से मुक्ति मिली राजेन्द्र हुए-2
अंजन चोर ऽऽऽ का कष्ट निवारा,
मन्त्र.....
सोते उठते चलते फिरते, इसी मन्त्र का जाप करो-2
आप कमायें पाप जो उनका, क्षय भी अपने आप करो-2
इस महामन्त्र का ऽऽऽऽ ले लो सहारा,
मन्त्र.....

जो अनछना पानी पियेगा - रोगी जीवन जियेगा।
लिपिस्टिक जो लगाएगा - होंठ वो कटवाएगा।

भजन-10

श्री आदिनाथ भगवान बड़े बाबा मेरे
बड़े बाबा मेरे.....
कुंडलाकार ये पर्वत प्यारा
जहाँ शुशोभित मन्दिर न्यारा,
ये तो जैन धरम की शान
बड़े बाबा मेरे.....
छत्रसाल ने पुण्य कमाया, मन्दिर जीर्णोद्धार कराया,
दिया खुले हृदय से दान, बड़े बाबा.....
पन्द्रह फूट की प्रतिमा साजे,
पद्मासन प्रभु स्वयं विराजे,
प्रतिमा मे प्रतिष्ठित प्राण, बड़े बाबा मेरे.....
प्रतिमा से निकली दुध की धारा,
मधुमक्खियों ने उपसर्ग टाला,
हुआ यतनो का दल हैरान, बड़े बाबा मेरे.....
सोने का कलश-चाँदी की झारी, अभिषेक की फिर तैयारी,
सारे कलश यहाँ पुण्य पाये, बड़े बाबा मेरे.....

नेल पॉलिस जो लगाते हैं - जहर साथ में खाते हैं।
गाली जो बकता है - गूँगा वो ही बनता है।

भजन-11

भगवान मेरी नैय्या, उस पार लगा देना,
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना-2

हम दीन दुःखी निर्धन, इक नाम रहे हर पल,
यह सोच दर्श देन्गे, प्रभू आज नहीं तो कल
जो बाग लगाया है, फूलों से सजा देना
अब तक तो.....

तुम शान्ती सुधाकर हो, तुम ज्ञान दिवाकर हो,
मम हँस चुगे मोती, तुम मानसरोवर हो।
दो बुँद सुधारस की, हमको भी पिला देना,
अब तक तो.....

रोकोन्गे भला कब तक, मुझे दर्शन करने से,
चरणों में लिपट जाऊँ, वृक्षों की लता जैसे।
अब द्वार खड़ा तेरे, मुझे राह दिखा देना
अब तक तो.....

मझधार पड़ी नैय्या, डगमग डोले भव में,
आओ वामा/त्रिशला नन्दन अब द्वार खड़ा कब से,
करता हूँ मैं विनती, मुझे अपना बना लेना,
अब तक तो.....

मुनि आर्यिका जो बनते हैं - घोर दुःखों से वो बचते हैं।
जो देखकर खाना खाते हैं - हिंसा से बच जाते हैं।

भजन-12

नाम तुम्हारा तारणहारा, कब तेरा दर्शन होगा,
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।
नाम तुम्हारा.....

सुरनर-मुनिजन तेरे चरणों में,
निशदिन शीश नवाते हैं।
जो गाते हैं तेरी महिमा,
मनवांछित फल पाते हैं।
धन्य घड़ी समझूँगा उस दिन,
जब तेरा दर्शन होगा।
तेरी प्रतिमामा.....

दीन दयाला करुणा सागर,
जग में नाम तुम्हारा है।
भटके हुये हम भक्तों का प्रभु,
तू ही एक सहारा है।
कब से पार उतरने को तेरे,
गीतों का सरगम होगा।
तेरी प्रतिमा.....

परोपकार जो भी करते हैं - महापुरुष वे ही बनते हैं।
विनय-नम्रता जो घरते हैं - सबके प्रेम-पात्र बनते हैं।

भजन-13

आया कहाँ से कहाँ है जाना, ढूँढ़ ले ठिकाना चेतन ढूँढ़ ले ठिकाना,
विद्यागुरु का मैं हूं दिवाना, मिल गया ठिकाना.....

इक दिन तेरा गोरा तन ये मिट्टी में मिल जायेगा,
कुटुम्ब कबीला खड़ा रहेगा, कोई साथ न जायेगा,
नहीं चलेगा कोई बहाना, ढूँढ़ ले ठिकाना
प्राणी ढूँढ ले.....
जब तक तन में सांस है चलती, सब तुझको अपनायेंगे,
जब न रहेन्गे प्राण ये तन में, देख तुझे घबरायेन्गे,
कहीं तो तुझको पड़ेगा जाना,
ढूँढ़ ले ठिकाना.....
सद्गुरु जगा रहे है चेतन, सुन भव से तर जायेगा,
सम्यक दर्शन ज्ञान चरित से दुःख सारा मिट जायेगा,
सच्चे सुखो का ये है खजाना,
ढूँढ़ ले ठिकाना.....
सबको तो जाना, निज को न जाना,
कैसा ज्ञानधारी तूने आपा न पिछाना,
ढूँढ़ ले ठिकाना.....

जो ज्यादा टी.वी. देखेगा - पागल वो बन जायेगा।
जिद्द जो भी करेगा - गिद्ध पक्षी बनेगा।

भजन-14

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहाँ जो सोवत है,

जो सोवत है वह खोवत है,
जो जागत है, सो पावत है।
उठ नींद से अँखिया खोल जरा,
और अपने प्रभु से ध्यान लगा।
यह प्रीत करन की रीत नहीं,
प्रभु जागत है, तू सोवत है,
उठ जाग.....
जो काल करे वो आज कर ले,
जो आज करे वो अब करले-2
जब चिडियाँ ने चुग खेत लिया,
अब पछतावत क्या होवत है।
उठ जाग.....
नादान भुगत अपनी करनी,
ऐ पापी पाप में चैन कहाँ-2
जब पाप की गठरी शीश धरी
अब शीश पकड़ क्यों रोवत है।
उठ जाग.....

भजन-15

सोते-सोते ही निकल गई सारी जिन्दगी
बातों-बातें में निकल यी सारी जिन्दगी।
सोते-सोते.....
जनम लेत ही इस धरती पर तुने रुदन मचाया,
आंखे खुल भी न पाई और भूख-भूख चिल्लाया।
रोते-राते ही निकल गई.....
खेल कूद में बचपन बीता, यौवन पा बौराया,
धरम करम का मरम न जाना, विषय भोग मन भाया।
भोगो-भोगो में निकल गई.....
धीरे-धीरे बढ़ा बुढ़ापा, डगमन डोले काया,
सब के सब रोगो ने देखो, डेरा खूब जमाया।
रोगों-रोगों में निकल गई.....
जिसको तू अपना समझा था, सो दे बैठा धोखा,
प्राण गये तब जल जायेगा, ये माटी का खोका।
सोते-सोते ही.....

भजन-16

जीवन के किसी भी पल में, वैराग्य उपज सकता है,
संसार में रहकर प्राणी संसार को तज सकता है।
कहीं दर्पण देख विरक्ति, कहीं मृतक देख वैरागी,
बिन कारण दिक्षा लेता, वो पूर्व जन्म का त्यागी,
निर्ग्रन्थ साधु ही इतने, सद्गुण से सज सकता है, संसार...
आत्मा तो अजर अमर है, हम आयु गिने इस तन थी,
वैसा ही जीवन बनता, जैसी धारा चिन्तन की,
वहीं सबको समझा पाता, जो स्वयं समझ सकता है,संसार...
शास्त्रों में सुने थे जैसे, वैसे ही देखे गुरुवर,
तेजस्वी परम तपस्वी, उपकारी विद्यासागर
जिनकी मृदुवाणी सुनकर, हर प्रश्न सुलझ सकता है, संसार...

भजन-17

जिया कब तक उलझेगा, संसार विकल्पों में,
कितने भव बीत चुके, संकल्प विकल्पों में।
उड़-उड़ कर ये चेतन, गति-गति में जाता है,
रागों में लिप्त सदा, भव-भव दुःख पाता है।
निज तो न सुहाता है, पर ही मन भाता है,
यह जीवन बीत रहा, झूठे संकल्पों में,
जिया कब.....
तू कौन कहाँ का है, और क्या है नाम अरे,
आया किस घर से है, जाना किस गाँव अरे।
यह तन तो पुद्गल है, दो दिन का ठांव अरे,
अंतरमुख हो जावे, तो सुख अविकल्पों में,
जिया कब.....
यदि अवसर चुका तो भव-भव पछतायेगा,
यह नर भव कठिन कहा, किस गति में जायेगा।
नरभव पाया ही तो, जिनकूल नहीं पायेगा,
अनिगिनते जन्मों में, अनगिनते कल्पों में,
जिया कब.....

दिन में जो भी सोयेगा, उल्लू वो बन जायेगा।
जो पेप्सी-कोला पीते हैं - रोगी जीवन जीते हैं।

भजन-18

पाना नहीं जीवन को, बदलना है साधना,
धुएँ सा जीवन मौत है, जलना है साधना,
पाना.....

मूढ़ मुडाना बहुत सरल है, मन मुण्डन आसान नहीं,
व्यर्थ भभूत रमाना तन पर, यदि भीतर का ज्ञान नहीं,
पर की पीड़ा में मोम सा, पिघलना है साधना
पाना.....

मन्दिर में हम बहुत गये पर, मन यह मन्दिर नहीं बना,
व्यर्थ शिवालय में जाना जो, मन शिव सुन्दर नहीं बना,
पल-पल समता में, इस मनका, ढ़लना है साधना,
पाना.....

सच्चा पाठ तभी होगा, जब जीवन में पारायण हो,
श्वाँस-श्वाँस धड़कन-धड़कन से, जुड़ी हुई रामायण हो,
नित सत् पथ पर, जन-जन का, चलना है साधना,
पाना.....

झूठ जो भी बोलेगा - तोतला वो बन जायेगा।
मंदिर जो नित आयेगा - स्वर्ग-मोक्ष पद पायेगा।

भजन-19

जब भी नैन मूंदो, जब भी नैन खोलो,
जय जिनेन्द्र बोलो-2
प्राणों में परस्पर, यही रस घोलो,
जय जिनेन्द्र.....

इस दुनिया का सार है जिनवर,
करूणा के अवतार है जिनवर
भव-भव में-2, भ्रमते जीवो को,
मुक्ति का आधार है जिनवर-2
गुण चरित्र इनके
हृदय में संजोलो
जय जिनेन्द्र.....

श्री जिनेन्द्र अगणित गुण धारी
परम कृपालु परम हितकारी
इनकी जय बोलेंगे तो होगी,
जीवन पथ पर विजय तुम्हारी-2
इनके भक्त बनकर
इनके दास हो लो,
जय जिनेन्द्र.....

भजन-20

(तर्ज - जहाँ नेमी के चरण चुरे...)

विद्यासागर गंगा, मन निर्मल करती है,

ज्ञानाद्रि से निकली है, शिवसागर मिलती है।

इक मूलाचार का कूल, इक समयसार तट है-2

दोनों होते अनुकूल संयम का पनघट है

स्याद्वाद वाह जिसका, दर्शक मन हरती है।

विद्यासागर.....

मुनिगण राज हंसा, गुण मणि मोती चुगते-2

जिनवर की संस्तुतियां पक्षी कलरव लगते

शिवयात्री क्षालन को, अविरल ही बहती है

विद्यासागर.....

नहीं राग द्वेष शैवाल, नहीं फेन विकारो का-2

मिथ्यात्व का मकर नहीं, नहीं मल अविचारों का

ऐसी विद्या गंगा, मृदु पावन करती है

विद्यासागर.....

जिसमें परिषह लहरें, और क्षमा की भंवरे हैं-2

करुणा के फूलों पर भक्तों के भौरें हैं,

तप के पुल मे से वह, मुक्ति में ढलती है,

विद्यासागर.....

भजन-21

आनन्द अपार है, भक्ति का प्रसार है,

देखो आज मन्दिर जी में, कैसा जय जयकार है।

मंगल आरती लेकर स्वामी, आया तेरे द्वार जी-2

गुण गाता हूँ सिद्ध चक्र का, होगा बेड़ा पार जी,

आनन्द.....

इन्द्र इन्द्राणी नाचे भगवन, आज तुम्हारे द्वार जी,

आदि प्रभु का करके नह्वन, बोले जय-जयकार जी-2

आनन्द.....

पर परिणति से अब तक भटका, शरण कहीं नहीं पाया जी,

तारन-तरन विरद सुन करके, सिद्ध शरण में आया जी-2

आनन्द.....

अब तो पार लगादो भगवन, सेवक चरण शिरनाया जी,

अजर अमर पर पा जाऊँ मैं, सिद्ध शरण में आया जी-2

आनन्द.....

चोरी जो भी करते हैं - जेलों में ही पड़ते हैं।

शराब जो भी पीते हैं - रो-रोकर ही जीते हैं।

भजन-22

निरखो अंग-अंग जिनवर के जिनसे झलके शांती अपार,

चरण कमल जिनवर कहे, घुमा सब संसार,
पर क्षण भंगुर जगत में, निज आत्म तत्व ही सार,
यातें पद्मासन विराजे,
जिनवर झलके शांति अपार

हस्थ युगल जिनवर कहे, पर का कर्ता होय,
ऐसी मिथ्या बुद्धि से ही, भ्रमण चतुरगति होय,
यातें पद्मासन विराजे,
जिनवर झलके.....

लोचन द्वय जिनवर कहे, देखा सब संसार,
दुःख भरा गति चतुर में, ध्रुव आत्म तत्व ही सार,
यातें नासा दृष्टि विराजे,
जिनवर झलके.....

अर्न्तमुख मुद्रा अहो, आत्म तत्व दरशाय,
जिन दर्शन कर निज दर्शन पा, सत्गुरु वचन सुहाय,
यातें अर्न्तदृष्टि विराजे,
जिनवर झलके.....

जो जिनवाणी पढ़ते हैं - मोक्षमार्ग में बढ़ते हैं।
गुरु वचन जो सुनते हैं - नहीं तनाव में रहते हैं।

भजन-23

ये कागज की नाव, तेरी कब तक चलेगी
कभी न कभी तो पानी में गलेगी-2.....

किया पाप तूने और धन को कमाया,
गरीबो को तूने, बहुत ही सताया,
ये निर्धन की दौलत तूझे कब तक फलेगी,
कभी न कभी.....

ये ऊँची हवेली और ऊँचे हवाले,
नहीं साथ देंगे, तेरे ही घर वाले,
जिस दिन ये तेरी, जवानी टलेगी,
कभी न कभी.....

औरो को तूने बहुत ही सताया,
नहीं धर्म के काम में, मन लगाया,
ये सुन्दर सी काया तेरी चित्ता में जलेगी,
कभी न कभी.....

तीर्थ वंदना जो करते हैं - तीर्थंकर का पद धरते हैं।
दान चार जो देते हैं - सदा सुखी वे रहते हैं।

भजन-24

ओ पालन हारे अनन्त गुण धारे, तुमरे बिन हमरा कौनउ नांही,

हमरी उलझन, सुलझा दो भगवन्,

तुमरे बिन हमरा कौनउ नांही।

तुम्ही हम का हो सहारे, तुम ही हमरे रख वाले॥

तुमरे बिन हमरा कौनउ नांही।

सिवा तेरे ना, दूजा हमारा,

तू ही आकर के देता सहारा,

विपदा जो आये, पल में मिट जाये।

तुमरे बिन.....

हम गरीबो का तू है सहारा,

तूमको अपना समझ के पुकारा,

जग से जो हारा, तूने ही तारा,

तुमरे बिन.....

तूने भक्तो के दुखड़ो को टाला,

हर मुसीबत से उनको निकाला,

भक्तो के प्यारे, आँखो के तारे,

तुमरे बिन.....

भजन-25

प्रभु नाम जपने से नव जीवन मिलता है,

तन मन का मुरझाया, उपवन खिलता है,

अन्तर के कोने में एक दीपक जलता है,

प्रभु नाम.....

श्री पाल प्रभु गुण गाकर, हां गाकर, तूफां में भी पार हुए वो सागर....2

चन्दनबाला दर्शन से हां दर्शन से, देखो पल में दूर हुए बंधन से....2

तनमन.....

हो सर्प अगर विषवाला हां विषवाला, कर लो मन में ध्यान बने जयमाला....2

सब छोड़ जगत की माया हां माया, ले लो मेरा मन, शील जगत की छाया....2

तनमन.....

संसार समुद्र है गहरा हाँ गहरा, कर्मो का हर ओर लगा है पहरा....2

भव ताप सभी जल जाये, हां जल जाये, सुमिरन से संताप सभी गल जाये....2

प्रभु नाम.....

तम्बाकू-गुटखा खाते हैं - कैंसर रोग बुलाते हैं।

शहद जो भी खायेगा - मधुमक्खी बन जायेगा।

भजन-26

तू अन्तरयामी सबका स्वामी....2
तेरे चरणों में प्रणाम
महावीर-महावीर,

त्रिशलानन्दन, मेटो भव बंधन...2
बिगड़े बनादे सारे काम,
कुण्डलपुर जन्में, तप किया वन में....2
अहिंसा का दिया पैगाम,
महिमा तुम्हारी, जग में न्यारी....2
चाँदनपुर है तेरो धाम,
शान्ति दाता- विश्वविधाता....2
तू ही सुबह तू ही शाम,
पार लगाना- भूल न जाना....2
तू ही करुणा का है नाम
पावापुर आये- मोक्ष तूम पाये....2
तीर्थंकर तुम्हें प्रणाम
जग में सांचो तेरो नाम
जिनवर स्वामी-जग में नामी....2
तेरों चरणों में चारो धाम,
महावीर.....

भजन-27

गुरु आपकी कृपा से हर काम हो रहा है,
करते है मेरे गुरुवर, मेरा नाम हो रहा है।

मेरी जिन्दगी में तू है, मेरे पास क्या कमी है,
मुझे और अब किसी की, दरकार भी नहीं है।
मुझे को पता नहीं है, ये क्या हो रहा है,
करते है मेरे.....
करता नहीं मैं कुछ भी, हर काम हो रहा है,
मुनिवर तेरी बदौलत, आराम हो रहा है।
बस होता रहें हमेशा जो कुछ भी हो रहा है,
करते है मेरे.....
पतवार के बिना ही मेरी नाव चल रहीं है,
मांगे बिना ही मुझको हर चीज मिल रही है।
मर्जी तेरी है गुरुवर, अच्छा ही हो रहा है,
करते है मेरे.....

प्राचीन भारत को पुनः लौटाने हेतु
आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के मुखारबिंद से उच्चरित मुख्य बिंदु

१. अंग्रेजी माध्यम हटाकर हिन्दी माध्यम लाना।
२. इण्डिया नहीं भारत का प्रयोग करना।
३. हथकरघा के माध्यम से रोजगार की बहुत बड़ी समस्या दूरकर शुद्ध जीवनशैली अपनाना।
४. कृषि एवं पशुपालन (गौपालन) से रामराज्य की स्थापना करना।
५. शिक्षा को जीवन में प्रायोगिक बनाना (७ २ कलाओं से युक्त करना)।

भजन-28

वीर नाम अति प्यारा है, कोई गा के देख ले,
आ जाते भगवान कोई बुला के देख ले.....

जिस घर में अंधकार, वहाँ मेहमान कहाँ से आये,
जिस मन में अभिमान, वहाँ भगवान कहाँ से आये,
अपने मन मन्दिर में, ज्योति जला के देख ले,
आ जाते.....
आधे नाम से आ जाते, हो कोई बुलाने वाला
बन जाते भगवान, हो कोई उस पथ पर चलने वाला
चन्दना उड़द दिखा के, कोई पड़गा के देख ले,
आ जाते भगवान कोई बुलाके देख ले ॥ वीर नाम....2 ॥

भजन-29

मेरे दुःख के दिनो में वो, बड़े काम आते है.....2
जब कोई नहीं आता मेरे गुरुवर आते है,
मेरे दुःख.....

मेरी नैया चलती है, पतवार नहीं होती,
मुझे और किसी की फिर दरकार नहीं होती
मैं डरता नहीं रस्ते, जहाँ सुनसान होते है,
मेरे दुःख.....
ये इतने बड़े होकर दीनो से प्यार करते,
अपने भक्तो के संकट, क्षण भर में दूर करते,
ये बिन बोले भक्तो की बात जान लेते है,
मेरे दुःख.....
कोई इनको याद करें, दुःख हल्का होता है,
जो भक्ति करें इनकी, वो इनका होता है,
ये भक्तो की बाते, क्षण में मान लेते है,
मेरे दुःख.....

भजन-30

अब ना करेंगे मनमानी, हृदय धरेंगे जिनवाणी,

कब से दर्शन को था प्यासा.....2
आज हुयी है पुरी आशा.....2
अब तो बनेंगे हम ज्ञानी-2
हृदय धरेंगे जिनवाणी.....2
चौतिस अतिशय के तुम धारी.....2
देख भविक ललचाते भारी.....2
अब तो बनेंगे केवलज्ञानी-2
हृदय धरेंगे जिनवाणी.....2
असुर चारण वंदन को आये.....2
फिर हम महिमा कैसे गाये.....2
तो भी करता ना हानी.....2
हृदय धरेंगे जिनवाणी,
अब.....

माँस जो भी खाते हैं - नरकों में पीटे जाते हैं।
जुँआ जो भी खेलते हैं - भिखारी बनकर जीते हैं।

राजस्थान की राजधानी **जयपुर** (गुलाबी नगरी) के गौरव प.पू. मुनि १०८ संधानसागर जी मुनिराज

रोहित से स्व-हित...

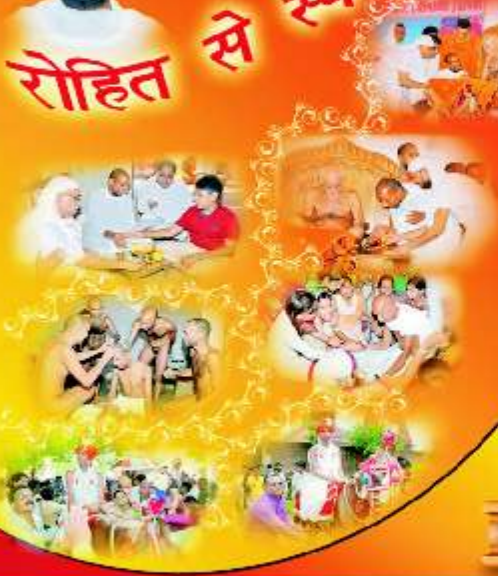

जैन अतिशय क्षेत्र

बीना जी बारहा

31 जुलाई 2015

आवों जाने ओर...

पूजा के प्रसून

माण्डना

आत्म आराधना

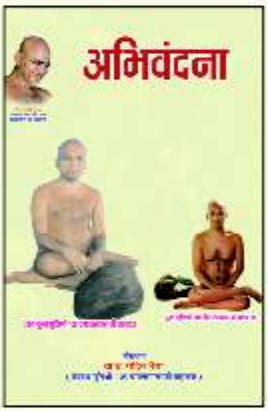
अभिवंदना

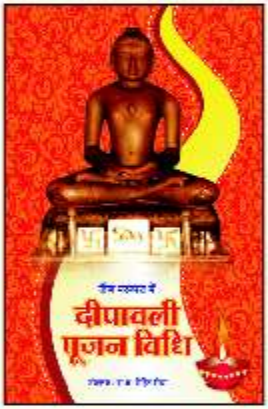
दीपावली पूजन विधि

बाल संस्कार सौरभ
भाग 1

बाल संस्कार सौरभ
भाग-2

बाल संस्कार सौरभ
भाग-3

बाल संस्कार सौरभ
भाग-4